मूल रचना : डॉ. अजय स्वाइं (ओड़िआ)
अनुसृजन : पारमिता षड़ंगी

काया

जो लोग यह सोचते हैं कि ओडिशा में लेखक बनना पाप है, कृपया इसे न पढ़ें। जो लोग जानते हैं कि लिखना पाप है, फिर भी इन सब बेकार की गतिविधियों में लगे रहते हैं: उनमें से गणपति एक है। गणपति को कोई नहीं जानता । गणपति भी कहाँ परवाह करता है? वह अपने रास्ते पर तो दुनिया अपने रास्ते पर है। लेकिन उसे इस बात का दु:ख है कि उसकी पत्नी बिजनवाला उसे एक लेखक के रूप में नहीं गिनती । यह गणपति को बहुत परेशान करता है। इसके लिए वह लेखन का काम छोड़ देगा क्या ?

गणपति की नजर में कुछ भी आए, वह उससे जुड़ी एक प्लॉट बना देता है। मान लीजिए, एक मक्खी उसकी थाली में आ बैठती है। वह मक्खी के बारे में सोचता है: "आह ! मक्खी का जीवन कितना छोटा होता है, और उस छोटे से जीवन में जीने के लिए उसे कितना संघर्ष करना पड़ता है। वह प्रेम करती है। वह परिवार बढ़ाती है, वह बीमारी बढ़ाती है फ़िर मर जाती है। इस तरह इस समय गणपति मक्खी बन जाता है। पता नहीं गणपति मक्खी के छोटे से काया में कैसे समा जाता है ।

यह चावल के कटोरे से लेकर गंदगी से भरा मैदान, बैल के कंधे का घाव की ओर उड़ती रहती है । गोबर की खुशबू इसे लुभाती है ।वंश वृद्धि करना उसके सामाजिक और नैतिक अधिकार है । उसी क्षण, यह एक प्रतिज्ञा लेती है, बंश वृद्धि करना और संघर्षपूर्ण जीवन जीने की ।

मादा मक्खी अपने पंख अनोखे ढंग से फड़फड़ाती है और उसे पुकारने के लिए गीत गाती है । उसके सिर के ऊपर की दो आँखें प्रेम से भीग जाती हैं । इस वक्त मादा मक्खी से भला सुंदर, युवा... रसीली... सचमुच, इस दुनिया में और कौन है ?

जब तक बिजनबाला चिलती नहीं, "क्या चावल ठंडे हो कर पत्थर जैसे न बन जाए तो क्या तुम नहीं खाओगे ? क्या सोचते रहते हो तुम , आग लगे इस सोच में ?" अब तक गणेश मक्खी के काया में ही रहता है । मक्खी से मनुष्य बनने में कुछ वक्त तो उसे लगता है । फिर वह मुड़कर बिजनबाला से पूछता हैं, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है ?"

"क्या होता है ?"

"मैं अचानक किसी और के काया में क्यों प्रवेश कर जाता हूँ ?"

" एक तो कोई काम नहीं । दूसरा चपरासी की नौकरी, तीसरा बच्चे का बोझ नहीं... चौथा मेरे जैसी औरत है जो ये सब सहती है, न..... इसलिए ।"

गणपति सोचता है, क्या इस बात पर उसे रोना चाहिए ? क्योंकि उसे दुनियादारी कुछ नहीं पता । शायद ज्यादा सोचना, उसका गलती है।

तो फ़िर, अचानक गणपति मक्खियों, मच्छरों, सांपों, लोमड़ियों, कुत्तों, मोरों, बंदरों, तारों, पहाड़ों, चट्टानों, पेड़ों, कागज, कूड़े के ढेर, लिली के फूलों, भिखारियों और दुर्घटनाओं में मरी बिल्लियों के शरीर में

कर जाता है । और अंत में, वह प्रथम पुरुष में लिखता है: मैं एक बिल्ली का बच्चा हूँ, हम चार भाई–बहन थे । हमारी माँ बहुत स्नेही और रोतलू थी... परिस्थिति की चक्र में हम कहाँ से कहाँ भटक गए ?अब मैं अकेला हूँ, लेकिन देखो, उस सुंदर, कोमल, मासूम बिल्ली के बच्चे का क्या हाल हुआ है ।

अब जाके गणपति को थोड़ी शांति महसूस होती थी । खैर, वह एक साधारण बिल्ली को भी लेकर लिख सकता है। क्या ये कोई छोटी बात है? लेकिन वह अपनी सारी लिखावट एक डिब्बे में रखकर ताला लगा देता है और चाबी अपनी जेब में रख लेता है ।

बिजनबाला पूछती है, "उस डिब्बे में क्या रखा है? गणपति पलकें झपका कर कहता है, "गुप्तधन ।"

उसने गुप्त के उपर जोर दिया और धन को हल्के से कहा ।

बिजनबाला अपना चेहरा बिगाड़ते हुए कहती, " और तो कोई काम नहीं है,....हूं....!"

गणपति सोचता है, "वह वही काम कर रहे हैं जिसके लिए वे इस दुनिया में आए है और ख़ूब खुश हैं । बस, भगवान ने इस सृष्टि की रचना नहीं की, और उन्होंने गणपति को इस सृष्टि के बारे में लिखने के लिए बनाया । इसमें उसकी क्या गलती है ? फ़िर गणपति शांति से सो जाता है ।

मज़े की बात यह है कि गणपति सोते समय सपने नहीं देखता । वह जो भी सोचता है या सपने देखता है, वह केवल जागते समय ही होता है और सोते समय गणपति मुर्दा बन जाता है । हम यह बात किसी को नहीं बताते, बिजनबाला कहती है, अपने धरम भाई नित्यानंद को । जिस दिन हाट बैठता है नित्यानंद गणपति के घर आता है,कहा जाए तो वह हर वह दिन आता है जब हाट बैठता है और अपने साथ वड़ा , पकोड़ा, लड्डू लाता है, और...? बिजनबाला शर्माते हुए जब पूछती है ।

तब नित्यानंद अपनी जेब से गजरा निकालता हैं। गणपति दफ्तर से लौटता है, खाना खाने के बाद जब बिस्तर पर जाता है तो देखता है कि गजरे का फूल बिस्तर पर बिखरा पड़ा है।

गणपति पूछता है, "क्यों जी..इस बिस्तर पर इतने सारे चमेली के फूल क्यों खिल रहे हैं?

बिजनवावला गाना गाती है ।

बिस्तर हजाया... फूल बिछाए... व्यर्थ यह रात बीत गयी... ।

गणपति चमेली के फूल बनना चाहता है... लेकिन दफ्तर में व्यस्तता .... और पेट भर खाना खाने के बाद... उसक आँखो के पलकें बंद होने लगती है ।

जब वह सुबह उठा तो बिस्तर पर फूल नहीं थे। गणपति ने पूछा, "सुनती हो... सारे फूल कहाँ गए ?"

बिजनबाला पूछती है, " कौन सा फूल है ?"

" कल जो बिस्तर पर खिले थे...?"

" गीर गये सारे !"

गणपति हँसा । इस मुरझाए फूलों पर कोई कविता लिखी जा सकती है, क्या कोई कहानी लिखी जा सकती है ?

जब गणपति तैयार होकर दफ्तर के लिए निकलता है, तो बिजनवाला की फरमाइश होती है , " सुनो, वापसी में अचार की बोतल लेते हुए आना । गणपति को आचार पसंद नहीं ।

तो वह बोलता है, " छी अचार ? उसे कौन खाता है ?"

बिजनाबला कहेती," मैं इसे खाऊँगी । मुझे अचार के सिवा कुछ पसंद नहीं है, तुम्हे क्या पता मुझे क्या पसंद है और क्या नहीं ?"

गणपति अब कुछ नहीं बोलता । ज़्यादा बोलने से मामला और बिगड़ जाएगा । भोजन करने के बाद गणपति कार्यालय चला जाता है । जाते समय वे बिजनवाला को देखता है । बिजनवाला के घने बालों पर चमेली का फूल, उसकी होठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान होती है ।

गणपति कार्यालय जाने के बजाय बिजनवाला के साथ पूरा दिन बिताने और उसके काया में प्रवेश करना चाहता है । पता करना चाहता है कि बिजनवाला क्या चाहती है...? उसकी इच्छा क्या है? उसका उद्देश्य क्या है? उसका दुख क्या है और सुख क्या है ?

लेकिन ... .दफ्तर..... दफ्तर । उसका दफ्तर एक बहुत उदास इंसान, हमेशा उसके चेहरे पर आँसू रहते हैं । वह हँसने भी रोता है... गाली देते वक्त भी रोता है । अजीब है ! हमेशा उँगलियाँ गिनता रहता है... या फिर कागज पर गोले काटता रहता है । वह त्रिभुज बनाता है और उनके अंदर लाल स्केच से रेखाचित्र खींचता है । वह आपको अपने कमरे में बुलाएगा और आप जाओगे तो.....मरने जैसा हालात । बदतमीज , क्या गाली–गलौज करता है ! बदमाश, दिन में साठ बार चाय माँगेगा । अगर चाय मीठी होगी तो गाली ,फीकी होगी तो भी गाली देगा । एक बार गणपति उसके काया में प्रवेश कर गया थे । शाला, इतनी खोखला था कि उसके अंदर कुछ भी नहीं था । बस चारों ओर घास बिखरी हुई थी, कुछ गन्दी जालियाँ हवा में लहरा रही थीं और चार गुलमोहर के पेड़ खड़े थे । बेशक, जब वह खेतों के बीच के मेड़ के किनारे बैठा, तो बांसुरी की आवाज़ बहुत सुरीली लगी । लेकिन सिर्फ़ यह दस सेकंड या उससे भी कम समय के लिए था । गणपति बेचैन होकर उसके काया से बाहर आ गगया । हालाँकि, उन्हें अपने शरीर को जीवित रखने के लिए एक काम की ज़रूरत तो है न । एक छोटे से घर को भरने के लिए, बिजनवाला की फरमाइशें पूरी करने के लिए । और फ़िर खुद जिंदा रहेगा तो दूसरे शरीर में प्रवेश कर सकेगा न ।

खैर,जब वह अचार की बोतल लेकर घर पहुँचा, तब तक अँधेरा हो चुका था । जैसे ही घर के सामने बाइक रोकी और अंदर दाखिल हुआ तो बिजनवाला की आवाज सुनाई दी, "मैंने ऐसे आचार अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं चखा था...।" शायद नित्यानंद ने कहा, "यह अचार... कंधमाल (एक जगह का नाम)आम से बना है। खास तुम्हारे लिए लाया हूँ ।

नित्यानंद अचार क्यों लाया ? बिजनबाला ने ऐसा क्यों कहा, मैंने अपने जीवन में कभी ऐसे अचार नहीं खाए ?

अब यहाँ गणपति की क्या भूमिका है ?

तो क्या उसे नित्यानंद या विज्नावाला के शरीर में प्रवेश करना होगा ?

बिजनबाला और गणपति की दस साल की दुनिया है । वह बिजनबाला की फरमाइश पूरा नहीं कर पाता है । उसे बच्चे, एक कोठा, कम से कम एक मोटरसाइकिल और एक सोने का हार ।

गणपति सब कुछ सुनता है । लेकिन वह बिजनवाला की इच्छा पूरी नहीं कर सकता है, क्योंकि उसके पास इसके लिए संसाधन नहीं है । पड़ोसी शंकर भी चपरासी है । वह स्कुटर चलता है । उनकी पत्नी सोने का हार पहनती है और बच्चे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं, मगर कैसे ?

कैसे ? गणपति ने स्वयं से यह प्रश्न पूछता रहा, लेकिन इसका उत्तर उसे नहीं मिला ।

इस बार गणपति को अपने ही काया में प्रवेश करके इन सवालों के जवाब खोजने होंगे।

गणपति स्वयं में समाहित हो गया । ओहो, उसके भीतर कितने सारे सूखे पेड़ ! बस दो तीन फूलों के पौधे है, जहाँ एक भी फूल नहीं खिलता और एक भी कली नहीं । कुछ बूढ़े लोग बैठे बैठे बेसुरा बाँसुरी बजा रहे थे और एक–दूसरे पर कुछ कुछ आरोप भी लगा रहे थे । और गणपति स्वयं एक निस्तरंग नदी के किनारे बैठे उसमें एक एक कंकड़ फेंकता रहा है । लेकिन पानी में कोई हलचल नहीं।

बिजनबाला की आवाज आई, "अरे ! आप दफ्तर से लौटकर यहाँ आकर ऐसे कैसे सो गए ? घंट तो बजाते, मैं दरवाजा नहीं खोलती क्या ?"

गणपति अभी तक नींद से पूरी तरह जागा नहीं था । वह चुपचाप शयनकक्ष में चले गया । पलंग पर चमेली के फूल खिले हुए थे। उसन सोचा कि यह खाली पलंग निस्तरंग नदी से कहीं अधिक सुरक्षित है और वह सो गया ।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, सोने के बाद गणेश सपना नहीं देखता ।